

100 पौधे हेतु आवश्यक बीजों की मात्रा

100 पौधे तैयार करने हेतु 50 से 60 ग्राम बीजों की आवश्यकता होगी।

बुआई हेतु उपयुक्त विधि

उपचारित बीज अप्रैल माह के अंत से मई माह के प्रथम सप्ताह में 08 से 10 सेमी दूर कतारों में 01 से 02 सेमी. गहराई में बोया जाता है। तत्पश्चात् मिट्टी, रेत एवं गोबर खाद के मिश्रण से ढंककर प्रतिदिन सिंचाई करना चाहिए। लगभग 15 से 20 दिन के बाद अंकुरण प्रारंभ होने लगता है।

रोपणी अवस्था में बीमारी एवं बचाव

रोपणी अवस्था में पौधे की जड़ों में निमेटोड का संक्रमण होने पर 10 जी. 48 या 3 जी. कार्बोथूरॉन के दानों का छिडकाव करना चाहिए। पत्तियों को खाने वाले केटर पिल्लरों को रोकने के लिए 0.2 प्रतिशत रोगार के घोल का प्रयोग करना चाहिए। डाइबैक रोग होने पर डॉइथेन-जेड 78 का 0.3 प्रतिशत के घोल का छिडकाव करना चाहिए।

पॉटिंग मिश्रण

पौधे की अच्छी वृद्धि के लिए पॉलीथिन में पौध रोपण हेतु मिट्टी+रेत+गोबरखाद को क्रमशः 2:1:1 के अनुपात में मिश्रण लेना चाहिए।

पॉलीथिन का माप

रोपणी से पौधे सीधे रोपण स्थल पर ले जाए जाते हैं। इन्हें पॉलीथिन में अधिक समय तक रोपित कर के रखने की आवश्यकता नहीं होती है। आवश्यकता होने पर पौध रोपण हेतु पॉलीथिन का माप 15 X 25 सेमी. का होना चाहिए।

उपयोग

सर्पगंधा की जड़ें अवसादक, निद्रादयक तथा रक्त दबाव कम करने वाली होती हैं। इसकी जड़ों में पायी जाने वाले एल्कोलाईड अलग-अलग गुणों के लिए स्वतंत्र रूप से प्रयोग किए जाते हैं। रेसरपीन, मनोविकारों तथा चिंता ग्रस्त अवस्था में प्रसन्नता का कार्य कराता है। तथा रोगी को शांत एवं मिलनसार बनाता है। सर्पेन्टीन अल्प रक्त दाब उत्पन्न करता है तथा आंत्रगति को उद्दीप्त करता है। अर्थात् इनकी जड़ों का प्रयोग दस्त, पेट के दर्दयुक्त संक्रमण, अनिद्रा, आदि रोगों में किया जाता है।

अन्य

इसका कायिक प्रवर्धन भी होता है तने एवं मूल की कटिंग से भी इसके पौधे तैयार हो जाते हैं।

संपर्क

डॉ. अर्चना शर्मा

वरि. वैज्ञानिक

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर (म.प्र.)

फोन: (0761) 2666529, 2665540

सर्पगंधा

बीज एवं रोपणी तकनीक

(रॉल्फिया सर्पिन्टाईना)



बीज प्रभाग

राज्य वन अनुसंधान संस्थान
पोलीपाथर, जबलपुर (म.प्र.) 482008

www.mpsfri.org

सर्पगंधा बीज एवं रोपणी तकनीक

प्रजाति का नाम	- सर्पगंधा
वानस्पतिक नाम	- <i>रॉल्फिया सर्पिन्टाईना</i>

परिचय

यह एपोसायनेसी कुल का बहुवर्षीय झाडीनुमा पौधा है। इसे संस्कृत में चंद्रिका, हिन्दी में छोटा चांद, सर्पगंधा और अंग्रेजी में सर्पेटित बुडए के नाम से जाना जाता है।

पहचान

यह 02 से 03 फिट लंबा होता है। इसका तना प्रायः शाखाविहीन, अनियमित, पीले-भूरे रंग की कार्क जैसी छाल युक्त होता है। पत्तियां चिकनी, त्रिचक्रीय, 05 से 18 सेमी. लंबी तथा 1.5 से 07 सेमी. चौड़ी भालाकार, अण्डाकार एवं आधार पर स्तूप आकार की होती हैं। फूल लाल रंग के गुच्छों में 2.5 सेमी. लंबे डंठल में लगे होते हैं। फल गोल गुठलीदार पकने पर काले चमकदार होते हैं जिसमें भूरे काले रंग के 01 से 02 बीजे पाये जाते हैं।

प्राप्ति स्थान

यह भारत के नम तथा हल्के गर्म क्षेत्रों में पाया जाता है यह हिमालय में लगभग 1300 मीटर की ऊँचाई तक पाया जाता है। उत्तर प्रदेश तथा उत्तरांचल में देहरादून से लेकर गोरखपुर तक ठंडे तथा छायादार

स्थानों में विशेषकर साल के वनों में पाया जाता है। मध्य प्रदेश में यह अब दुर्लभ प्रजाति की श्रेणी में आ गया है।

स्थानीय कारक (Locality Factor)

यह बालुई, जलोढ़ से लेकर, लाल लैटेराइट, दोमट जैसी अनेक प्रकार की मिट्टी में उगाया जा सकता है। इसकी मिट्टी के लिए पी.एच. 04 से 06 के मध्य होना चाहिए। इसकी वृद्धि एवं उपज के लिए औसतन तापमान 15 से 35 डिग्री सेल्सियस के मध्य वाले क्षेत्र उपयुक्त माने जाते हैं। अधिकतम ठंडे स्थानों में इसकी वृद्धि पर विपरीत असर पड़ता है तथा पाला पड़ने पर पत्तियों को नुकसान पहुंचता है। यह 18 माह की अवधि में तैयार होने वाली एक सिंचित फसल है। बीज चक्र बीजोत्पादन प्रतिवर्ष होता है।

ऋतुजैविकी (Phenology)

इस पौधे में फल नवम्बर - दिसंबर के मध्य आते हैं एवं फलों का एकत्रीकरण माह दिसंबर में किया जाता है।

प्रतिकिलो बीजों की संख्या

प्रतिकिलो बीजों की संख्या 32000 से 33000 के बीच होती है।

जीवन क्षमता अवधि

बीज में जीवन क्षमता अवधि 08 से 10 माह तक होती है।

सुसुप्तावस्था

बीज में 03 से 04 माह तक की सुसुप्तावस्था होती है।

अंकुरण क्षमता

बीज की अंकुरण क्षमता 10 से 60 प्रतिशत तक होती है।

पौध प्रतिशत

पौध प्रतिशतता 07 से 40 प्रतिशत तक होती है।

उपयुक्त भंडारण विधि

बीज को कमरे के तापमान पर बंद पॉलिथिन बैग में रखा जाना चाहिए।

उपयोगिता की अवधि

बीज संग्रहण के पश्चात् 08 से 10 माह के अंदर उपयोग कर लेना चाहिए।

बुआई पूर्व उपचारण

24 घंटे तक ठंडे पानी में भिगोकर रखने के पश्चात् बुवाई करना चाहिए।

अंकुरण हेतु उपयुक्त माध्यम

दो भाग रेत एवं एक भाग मिट्टी का मिश्रण लेकर बुवाई करना चाहिए।

बुआई का समय

अप्रैल अंत से मई प्रथम सप्ताह में बुवाई करनी चाहिए।